"यकीन"

• महा अगनि ते तुध हाथ दे राखे पए तेरीं सरणाई । तेरा माण ताण रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ।1।

अर्थ:- हे प्रभु ! जो मनुष्य तेरी शरण आ पड़े तूने उन्हें अपना हाथ दे के तृष्णा की बड़ी आग में से बचा लिया । उन्होंने किसी और से मदद की आस अपने दिल से खत्म कर दी, उनके हृदय में तेरा ही माण तेरा ही आसरा बना रहता है ।

मेरे राम राइ तुध चित आइऐ उबरे । तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जापि नाम तुम्हरा उधरे ।1।रहाउ।

अर्थः- हे मेरे प्रभु पातशाह ! अगर तू जीवों के चित्त में आ बसे, तो वह संसार - समुंदर में डूबने से बच जाते हैं । वह मनुष्य तेरा नाम जप के विकारों से खलासी पा लेते हैं, उनको हर बात के लिए तेरा ही आसरा तेरी सहायता का भरोसा बना रहता है ।

अंध कूप ते काढि लीए आपि भए किरपाला । सारि सम्हालि सरब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ।2।

अर्थः- हे प्रभु ! जिस मनुष्यों पर तू खुद दयावान हो गया, तूने उनको माया के मोह के अंधेरे कूएँ में से निकाल लिया, तूने उनकी सार ले के उनकी संभाल करके उन्हें सारे सुख बख्शे । हे भाई ! प्रभु खुद ही उनकी पालना करता है ।

आपणी नदरि करे परमेसर बंधन काटि छडाए । आपणी भगती प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ।3।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्यों पर परमात्मा अपनी मेहर की निगाह करता है, उनके मोह के बंधन काट के उनकों विकारों से छुड़वा लेता है । उनको खुद ही अपनी सेवा भक्ति में जोड़ लेता है । हे भाई ! प्रभु ने उनसे अपनी भक्ति खुद ही करवा ली ।

भरम गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा । नानक दइआ करी सुखदाते भेटिआ सतिगुर पूरा ।4। (4-748)

अर्थः- हे नानक ! सुख देने वाले प्रभु ने जिस पर दया की उन्हें पूरा गुरु मिल गया, उनके अंदर से भटकना दूर हो गई, उनके अंदर से मोह और अन्य सारे डर नाश हो गए, उनकी सारी चिन्ता फिक्र समाप्त हो गई ।

- सभे गला विसरन इको विसरि न जाउ । धंधा सभ जलाइ कै गुरि नाम दीआ सच सुआउ ।

अर्थः- मेरी तो सदा यही अरदास है कि और सारी बातें बेशक भूल जाएं, पर एक परमात्मा का नाम मुझे कभी ना भूले । गुरु ने दुनिया के धंधों से मेरा सारा मोह जला के मुझे प्रभु का नाम दिया है ।

आसा सभे लाहि के इका आस कमाउ । जिनी सतिगुर सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ।1।

अर्थः- यह सदा स्थिर नाम ही अब मेरा जीवन उद्देश्य है । मैं दुनिया की सारी आशाएं मन से दूर करके एक परमात्मा की आस अपने अंदर पक्की करता हूं । जिस लोगों ने सतिगुरु का आसरा लिया है उनको परलोक में प्रभु की दरगाह में आदर मिलता है ।

मन मेरे करते नो सालाहि । सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! करतार की महिमा कर पर, यह महिमा की दात गुरु से ही मिलती है । सो तू सभी चतुराईयां छोड़ के गुरु के चरणों पर गिर जा ।

दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होई । कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोई ।

अर्थः- अगर, सुख देने वाला परमात्मा मन में बस जाए, तो ना दुनिया के दुख जोर डाल सकते हैं, ना माया की तृष्णा ही कमजोर कर सकती है । जब, हृदय में वह सदा स्थिर रहने वाला परमात्मा बसता हो, तो किसी भी काम में लगें आत्मिक जीवन कमजोर नहीं होता ।

जिस तूं रखहि हथ दे तिस मार न सकै कोई । सुखदाता गुर सेवीऐ सभि अवगण कढै धोई ।2।

अर्थः- हे प्रभु ! जिस मनुष्य को तू अपना हाथ दे के विकारों से बचाता है, कोई विकार उसे आत्मिक मौत मार नहीं सकते । हे भाई ! आत्मिक आनंद देने वाले सतिगुरु की शरण लेनी चाहिए, सतिगुरु मन में से सारे अवगुण निकाल के धो देता है ।

सेवा मगै सेवको लाईआं अपनी सेव । साधू संग मसकते तूठै पावा देव ।

अर्थः- हे प्रकाश स्वरूप प्रभु ! मैं सेवक तेरे से उन जीव - स्त्रीयों की सेवा का दान मांगता हूं, जिनको तूने अपनी सेवा में लगाया हुआ है । हे प्रभु ! अगर, तू ही मेहर करे तो मुझे साधु - संगत की प्राप्ति हो और सेवा की दात मिले ।

सभ किछ वसगति साहिबै आपे करण करेव । सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ।3।

अर्थः- हे भाई ! हरेक दात मालिक के अपने इख्तियार में है । वह खुद ही सब कुछ करन कारण योग्य है । मैं अपने सतिगुरु से सदके जाता हूं । सतिगुरु मेरी सारी जरूरतें पूरी करने वाला है ।

इको दिसै सजणो इको भाई मीत । इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ।

अर्थः- हे भाई ! जगत में एक परमात्मा ही असल सज्जन दिखाई देता है वही एक असली भाई है और मित्र है । दुनिया का सारा धन पदार्थ उस एक परमात्मा का ही दिया हुआ है । उस ही की मर्यादा जगत में चल रही है ।

इकस सिउ मन मानिआ ता होआ निहचल चीत । सच खाणा सच पैनणा टेक नानक सच कीत ।4। (5-43)

अर्थः- हे नानक ! जब मनुष्य का मन एक परमात्मा की याद में रच जाता है, जब उसका चित्त माया की ओर डोलने से हट जाता है । वह परमात्मा के सदा स्थिर नाम को अपनी आत्मा की खुराक बना लेता है । नाम को ही अपनी आत्मिक पोशाक बनाता है और सदा स्थिर नाम को ही अपना आसरा बनाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"